चढ़ाओ नशा...

27-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - सारी दुनिया में तुम्हारे जैसा खुशनसीब कोई नहीं, तुम हो राजऋषि, तुम राजाई के लिए राजयोग सीख रहे हो"

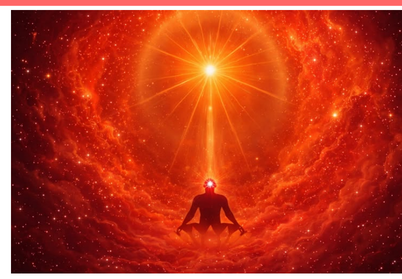

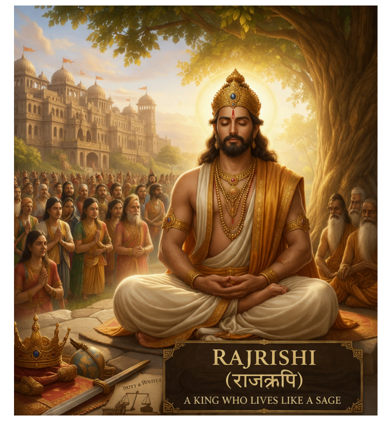

प्रश्नः निराकार बाप में कौन से संस्कार हैं जो संगम पर तुम बच्चे भी धारण करते हो?

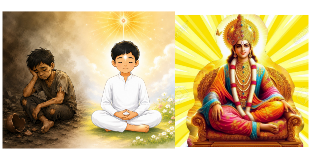

उत्तर: निराकार बाप में ज्ञान के संस्कार हैं, वह तुम्हें ज्ञान सुनाकर पतित से पावन बना देते हैं इसलिए उन्हें ज्ञान का सागर, पतित-पावन कहा जाता है। तुम बच्चे भी अभी वो संस्कार धारण करते हो। तुम नशे से कहते हो हमें भगवान पढ़ाते हैं। हम उनसे सुनकर सुनाते हैं।

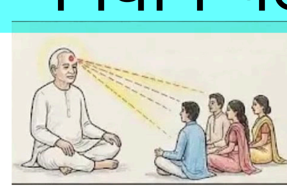

गीत:-आखिर वह दिन आया आज... Click

आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज
जिस दिन का रस्ता ताकता था
जिसका था मोहताज आखिर
जिस दिन का रस्ता ताकता था
जिसका था मोहताज
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज

आज मेरे घर आशा आई
आज हुई मेरी सुनवाई
आज मेरे घर आशा आई
आज हुई मेरी सुनवाई
आज मेरा हाथ आ कर पकड़ा
आज मेरा हाथ आ कर पकड़ा
आप ग़रीब नवाज़
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज
जिस दिन का रस्ता ताकता था
जिसका था मोहताज
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज

जिनके मन में नेक इरादे
उनकी मुश्किल दूर हटा दे हाँ
जिनके मन में नेक इरादे
उनकी मुश्किल दूर हटा दे हाँ
तेरे घर में क्या मुश्किल है
तेरे घर में क्या मुश्किल है
सुन ओ राजाधिराज
तेरे घर में क्या मुश्किल है
सुन ओ राजाधिराज
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

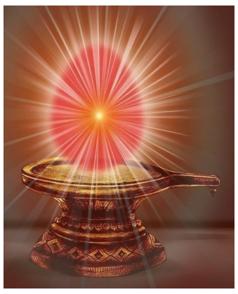

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों ने यह गीत सुना। यह महिमा किसकी है? एक बाप की। शिवाए नम:, ऊंच ते ऊंच भगवान है ना। बच्चे

चढ़ाओ नशा...

जानते हैं वह हमारा बाप है। ऐसे नहीं कि हम सभी बाप हैं। गाया भी जाता है सारी दुनिया ब्रदर हुड है। संन्यासी अथवा विद्वानों के कहने अनुसार ईश्वर सर्वव्यापी कहने से जैसे कि फादरहुड हो जाता है। ब्रदर होने से बाप तो सिद्ध होता है, जिससे वर्सा मिलना है। फादरहुड है तो फिर वर्से की बात ही नहीं है। बच्चे जानते हैं हम सभी आत्माओं का बाप एक है, उनको कहा ही जाता है - वर्ल्ड गॉड फादर। वर्ल्ड में कौन है? सभी ब्रदर्स हैं, आत्मायें हैं। सबका गॉड फादर एक ही है। उस बाप की सभी प्रार्थना करते हैं। एक की ही बन्दगी वा पूजा होनी चाहिए। वह है सतोप्रधान पूजा। यह भी समझाया है - ज्ञान, भक्ति और वैराग्य। बाप ज्ञान देते हैं सद्गति के लिए। सद्गति कहा जाता है जीवन-मुक्ति धाम को। यह आत्मा को बुद्धि में धारण करना है। हमारा घर शान्तिधाम है। उसको मुक्तिधाम, निर्वाणधाम भी कहा जाता है। सबसे

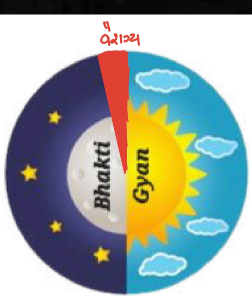

Poi

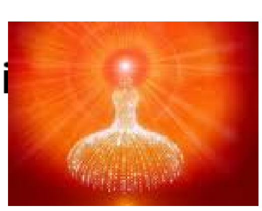

शांतिधाम ,मुक्तिधाम,
निर्वाणधाम,
आत्माओं का घर

सेवा M.imp.

27-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

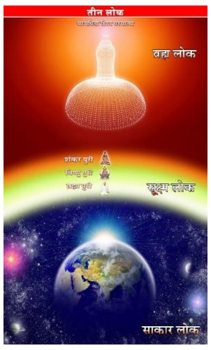

अच्छा नाम है - शान्तिधाम। यहाँ तो आरगन्स होने के कारण आत्मा टॉकी में रहती है, बोलना पड़ता है। सूक्ष्मवतन में है मूवी। इशारे में बात होती है, आवाज नहीं होती। तीनों लोकों को भी तुम जान गये हो। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन, बुद्धि में यह अच्छी रीति बैठा है। मनुष्य सृष्टि के लिए ही गाया जाता है कि यह सृष्टि चक्र लगाती है। उसको कहा जाता है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी। मनुष्य ही तो उसको जानेंगे ना। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाते हैं। ऊंच ते ऊंच बाप है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, वही जानते हैं। इस चक्र को जानने से ही तुम चक्रवर्ती राजा बने हो।

चढ़ाओ नशा...

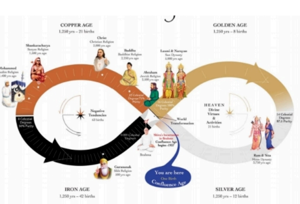

गाते भी हैं देवतायें सम्पूर्ण निर्विकारी हैं। लक्ष्मी-नारायण के चित्र हैं ना। वह सम्पूर्ण निर्विकारी और अपने को कहते हैं सम्पूर्ण विकारी। सतयुग में हैं सम्पूर्ण निर्विकारी अथवा सम्पूर्ण पावन। कलियुग में हैं सम्पूर्ण विकारी, सम्पूर्ण पतित। भारत की ही बात है। यह बाप ही आकर बुद्धि में बिठाते हैं और कोई नहीं जानते हैं। उन्होंने तो सतयुग को लम्बा समय दे दिया है। समझते हैं लाखों वर्ष पहले

Exclusive Authority of Shiv baba

सतयुग था। तो किसी की बुद्धि में यह बात आती ही नहीं है।

अब बच्चे जानते हैं - हम अभी सम्पूर्ण विकारी से सम्पूर्ण निर्विकारी बन रहे हैं। सम्पूर्ण पतित से सम्पूर्ण पावन बनना है। बाप समझाते हैं आत्मा में ही खाद पड़ी हुई है, गोल्डन एज से अब आइरन एज बन गई है। यह आत्मा की भेंट की जाती है। यह अच्छी रीति समझना है। चढ़ाओ नशा... तुम बच्चे बहुत खुशनसीब हो, तुम्हारे जैसा Point for Life time खुशनसीब कोई और नहीं। अभी तुम राजयोग में बैठे हो, Swamaan तुम राजऋषि हो। राजाई के लिए कभी कोई पढ़ाई होती है क्या? बैरिस्टर बनायेंगे परन्तु विश्व का महाराजा कौन बनायेगा? बाप के सिवाए कोई बना न सके। यहाँ महाराजा तो कोई है नहीं। सतयुग के लिए तो जरूर चाहिए। किसको जरूर आना पड़े। बाप कहते हैं मैं आता हूँ तब, जब भक्ति पूरी होनी होती है। अब भक्ति पूरी हुई और कोई बात इसमें उठा

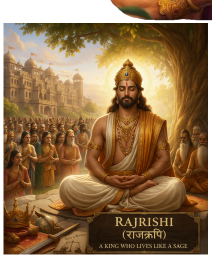

ही नहीं सकते। हमको बाप बैठ पढ़ाते हैं - यह नशा होना चाहिए। हम आत्माओं को निराकार बाप परमपिता परमात्मा शिव पढ़ाते हैं। शिव को तो कोई जानते ही नहीं। अब तुम बच्चे जानते हो बाबा फिर से स्वर्ग की राजाई स्थापन कर रहे हैं।

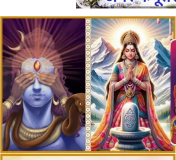
Story of the Third Eye/Teej

हम उनको महाराजन श्री नारायण और महारानी श्री लक्ष्मी कहते हैं। भक्ति मार्ग में सत्य नारायण की कथा सुनाते हैं। अमरकथा और तीजरी की कथा। बाप तीसरा नेत्र भी देते हैं। नर से नारायण बनने की कथा सुनाई जाती है। वही बातें जो पास्ट हो जाती हैं, वह फिर भक्ति मार्ग में काम आती हैं।

अभी तुम बच्चे समझते हो बाबा हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, हम हकदार हैं। भगवान तो स्वर्ग का रचयिता है ना। हम भगवान की सन्तान हैं तो हम स्वर्ग में क्यों नहीं हैं! कलियुग में क्यों पड़े हैं? परमपिता परमात्मा तो नई दुनिया रचते हैं। पुरानी दुनिया थोड़ेही भगवान रचते हैं। पहले नई दुनिया बनाते हैं। उसके बाद फिर पुरानी को तोड़ेंगे। तुम जानते हो हम सतयुग के लिए राज्य ले रहे हैं। सतयुग में कौन होंगे? इन लक्ष्मी-नारायण की

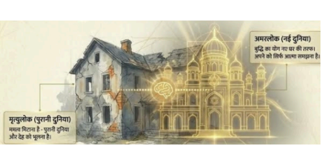

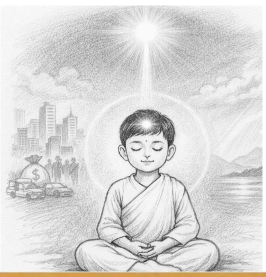

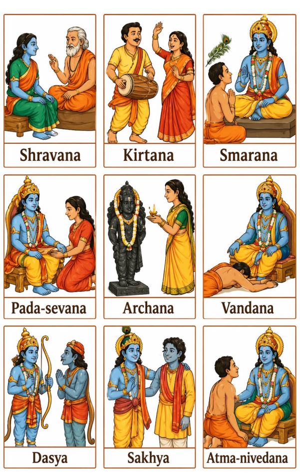

डिनायस्टी होगी और भी तो राजायें होंगे ना। जिसकी निशानी है विजय माला। बच्चे जानते हैं अभी हम विजयमाला में पिरोने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। दुनिया में माला का अर्थ कोई नहीं जानते कि यह क्यों पूजी जाती है, ऊपर में फूल कौन है? माला को फेरते-फेरते फिर फूल को नमस्ते करते हैं फिर माला फेरेंगे। माला बैठ सिमरते हैं कि कहाँ बाहर ख्यालात न जायें। अन्दर राम-राम की धुन लगाते हैं, जैसे बाजा बजता है। बहुत प्रैक्टिस करते हैं। यह सब हैं भक्ति मार्ग की बातें। हाँ बहुत भक्ति करने वाले सिर्फ कोई विकर्म नहीं करेंगे। बहुत भक्ति करने वाले के लिए समझेंगे कि यह सत्यवादी होगा। मन्दिर में माला रखी होगी, माला फेरते मुख से राम-राम कहते रहेंगे। बहुत लोग समझते हैं भक्ति में पाप नहीं होता। कहते हैं नौधा भक्ति से मनुष्य मुक्त हो जाते हैं। परन्तु होता कुछ भी नहीं। यह एक नाटक है। उसमें सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो में सबको आना ही है। वापिस एक को भी नहीं जाना है। जैसे ऊपर में जगह खाली हो जाती है। वैसे यहाँ भी

बहुत जगह खाली हो जायेगी। देहली के आसपास, मीठी नदियों पर राजधानी होती है। समुद्र की तरफ नहीं होती है। यह बॉम्बे आदि होंगे नहीं। वह तो पहले मच्छीमयानी थी। मछली फँसाने वाले वहाँ रहते थे। अभी तो समुद्र को कितना सुखाया है। फिर भी मच्छीमयानी होगी। सतयुग में तो बॉम्बे होती नहीं। वहाँ कोई पहाड़ियां आदि भी नहीं होती। कहाँ जाने की दरकार ही नहीं होती।

यहाँ मनुष्य थकते हैं तो जाते हैं रेस्ट लेने। सतयुग में थकने करने की कोई प्रकार की तकलीफ नहीं होती, तुम स्वर्गवासी बन जाते हो। रिंचक भी तकलीफ नहीं होती। तो अब बच्चों को बाप की श्रीमत पर चलना है।

बाप कहते हैं - मीठे लाडले बच्चों, शरीर निर्वाह अर्थ धन्धा आदि तो करना है। स्कूल में स्टूडेन्ट पढ़कर फिर घर में जाकर पढ़ते हैं। घर का कामकाज भी करते हैं। यह भी ऐसे है। इस पढ़ाई में तो तुमको कोई तकलीफ नहीं है। उस पढ़ाई में

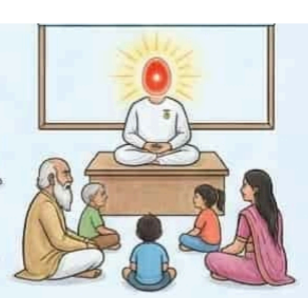

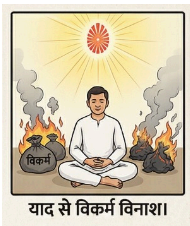

कितनी सब्जेक्ट होती हैं। यहाँ तो एक पढ़ाई और एक ही प्वाइंट है - मनमनाभव, इससे तुम्हारे पाप नाश होंगे। भगवानुवाच है ना, वह समझते हैं गीता; भगवान ने द्वापर में सुनाई। परन्तु द्वापर में सुनाकर क्या करेंगे? श्रीकृष्ण के चित्र में लिखत बहुत अच्छी है। यह लड़ाई तो एक निमित्त है। सब मरेंगे तब तो वापिस मुक्ति-जीवनमुक्ति में जायेंगे। सो भी सिर्फ लड़ाई में थोड़ेही मरेंगे! अनेक प्रकार की कैलेमिटीज़ होंगी। बच्चों को कोई दु:ख नहीं होना चाहिए। मनुष्य का हार्ट फेल होता है तो उसमें कोई दु:ख नहीं होता है। मौत हो तो ऐसा। बैठे-बैठे हार्टफेल हुआ खलास। जब तक डॉक्टर आये आत्मा निकल जाती है। अब तो सबका मौत होना है। पिछाड़ी में न हॉस्पिटल, न डॉक्टर रहेंगे। न क्रियाकर्म करने वाले रहेंगे। कुछ भी नहीं होगा। सबके प्राण तन से निकलेंगे। मूसलधार बरसात पड़ेगी। मौत में कोई देर थोड़ेही लगेगी। कोशिश कर रहे हैं - ऐसे बॉम्बस बनायें जो मनुष्य फट से मर जायें। ऐसे-ऐसे बाम्बस बनाते रहते हैं। बाम्बस की इम्प्रूवमेन्ट करते रहते हैं। यह ड्रामा में नूँध है।

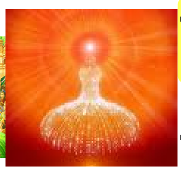

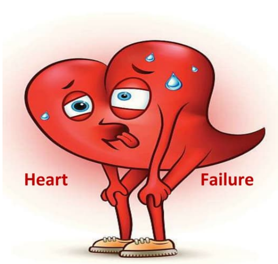

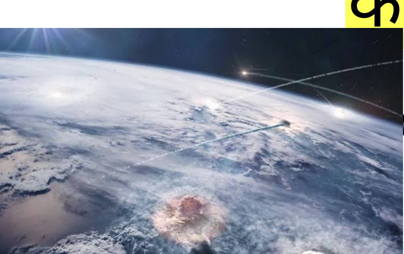

27-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

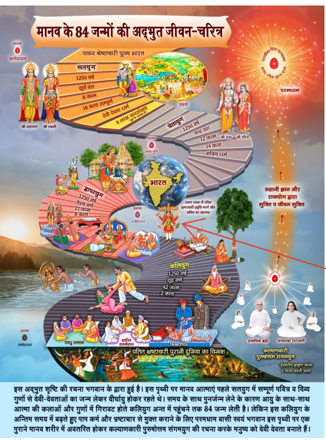

ड्रामा में बना-बनाया खेल है, कल्प-कल्प विनाश होता है। सतयुग में तुमको यह ज्ञान रहेगा नहीं। बाप को ही आकर ज्ञान देना है। स्थापना हो गई फिर ज्ञान की बात ही नहीं रहती। फिर जब रावण राज्य शुरू होता है तो भक्ति शुरू होती है। अब भक्ति पूरी होती है, अब तुमको योगबल से पावन बनना है। पावन बनने से ही सुखधाम शान्तिधाम में जा सकते हैं। चार्ट रखना पड़े। यह तो समझ गये हो - हमको बाप को याद कर तमोप्रधान से सतोप्रधान यहाँ बनना है। ऐसे कोई शास्त्र आदि में लिखा हुआ नहीं है। बच्चों ने गीत सुना - आखिर वह दिन आया आज... जबकि भारतवासी फिर राजाओं के राजा बनते हैं। राजाओं के राजा अथवा महाराजा बनते हैं। पीछे त्रेता में होते हैं - राजा-रानी। फिर जो पूज्य महाराजा-महारानी थे, वह द्वापर में वाम मार्ग में आकर पुजारी बन जाते हैं। आपेही पूज्य आपेही पुजारी हो जाते हैं। बाप कहते हैं मैं पुजारी नहीं बनता हूँ। देवतायें पूज्य होते हैं, मैं नहीं बनता। न ही पुजारी बनता हूँ। भारतवासी देवी-देवताओं के ही मन्दिर बनाकर

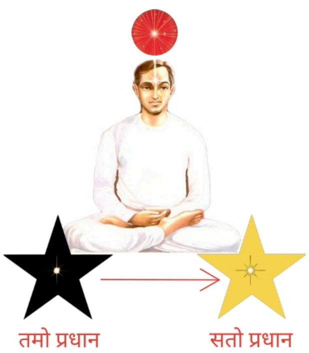

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

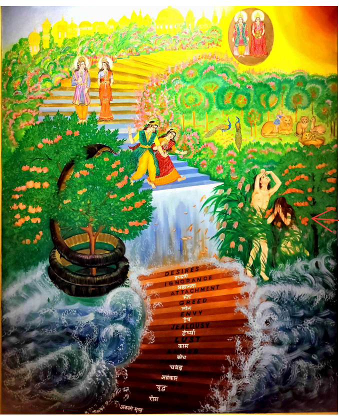

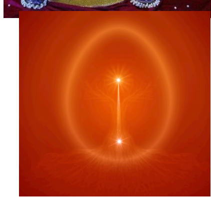

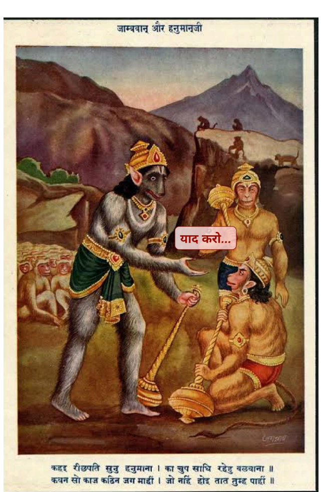

उनका पूजन करते हैं। लक्ष्मी-नारायण जो पहले पूज्य थे फिर भक्ति मार्ग में वही शिवबाबा के पुजारी बनते हैं। जिस शिवबाबा ने महाराजा-महारानी बनाया, उनके फिर मन्दिर बनाकर पूजा करते हैं। विकारी भी कोई फट से नहीं बनते हैं। आहिस्ते-आहिस्ते बनते हैं। निशानी भी देवताओं की वाम मार्ग में दिखाते हैं। जो पूज्य लक्ष्मी-नारायण थे वही फिर पुजारी बन जाते हैं। पहले-पहले शिव का मन्दिर बनाते हैं। उस समय तो हीरों को कट कराए लिंग बनाते हैं, पूजा के लिए। यह किसको भी पता नहीं है कि परमात्मा छोटी सी बिन्दी है। यह तुम अभी समझते हो कि बड़ा लिंग नहीं है। मन्दिर तो बहुत बनायेंगे। राजा को देख प्रजा भी ऐसे करेगी। पहले-पहले शिवबाबा की पूजा होती है। उनको कहा जाता है अव्यभिचारी सतोप्रधान पूजा फिर सतो रजो तमो में आते हैं। तुम रजो तमो में आये हो तो नाम ही हिन्दू रख दिया है। असुल थे देवी-देवतायें। बाप कहते तुम असुल देवी-देवता धर्म के हो। परन्तु तुम बहुत पतित बन गये हो, इसलिए अपने को देवता कहला

नहीं सकते हो क्योंकि अपवित्र हो। हिन्दू नाम तो बहुत देरी से रखते हैं।

अभी तुम समझते हो हम सो पूज्य थे, अभी संगमयुग पर न पूज्य हैं, न पुजारी हैं। तुम क्या करते हो? श्रीमत पर पूज्य बन रहे हो, औरों को भी बना रहे हो। तुम हो ब्राह्मण, तुम्हारी आत्मा पवित्र होती जाती है। पूरा पवित्र होंगे तो यह पुराना चोला छोड़ना पड़ेगा। बाप कहते हैं बिल्कुल सहज है। बूढ़ी माताओं को धारणा नहीं होती है। बाप कहते हैं - यह तो समझते हो कि हम आत्मा हैं। आत्मा में ही अच्छे वा बुरे संस्कार होते हैं। आत्मा ने जो कर्म किया वह दूसरे जन्म में भोगना होता है। बाप भी आत्माओं से बात करते हैं। बाप कहते हैं - हे बच्चे आत्म-अभिमानी बनो। निराकार शिवबाबा निराकारी आत्माओं को पढ़ाते हैं। निराकार बाबा में ज्ञान के संस्कार हैं। शरीर तो उनको है नहीं। तो वह ज्ञान का सागर, पतित-

27-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

पावन है। उनमें सब गुण हैं। बाप कहते हैं मैं आकर तुम बच्चों को पावन बनाता हूँ। युक्ति कितनी सहज है। अक्षर ही एक है मनमनाभव, मामेकम् याद करो। याद से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। यह भी जानते हो - अभी हम ब्राह्मण हैं। फिर सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी, वैश्य, शूद्र वंशी बनेंगे। हम ही इस 84 के चक्र में आयेंगे। ऊपर से नीचे उतरेंगे फिर बाबा आयेंगे। बरोबर यह सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। सृष्टि यह पुरानी होती है तो फिर बाबा आते हैं नई बनाने। यह तो बुद्धि में बैठता है ना। यह चक्र बुद्धि में फिरना चाहिए। अब तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो, जिससे फिर जाकर चक्रवर्ती राजा बनेंगे। अच्छा!

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

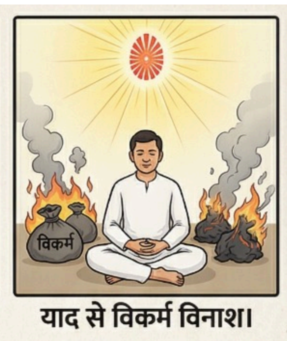

याद से विकर्म विनाश।

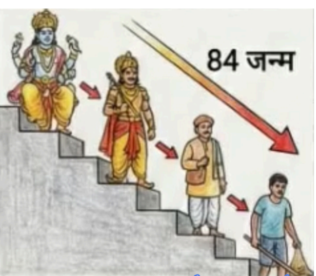

Again & Again & Again

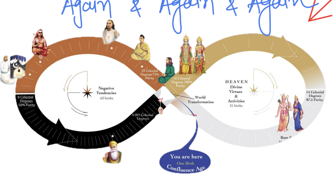

Spinnin' round and round

Refer last pages for wonderful S

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

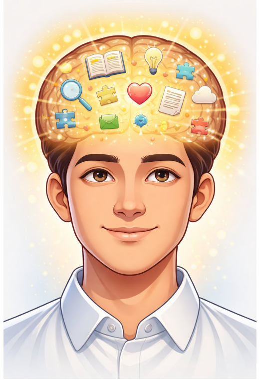

27-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) श्रीमत पर पूज्य बनना है। आत्मा में जो बुरे संस्कार आ गये हैं उसे ज्ञान योग से समाप्त करना है। सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है।

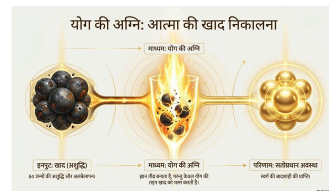

2) शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करते भी पढ़ाई पढ़नी और पढ़ानी है। योगबल से पावन बन राजाई पद लेना है।

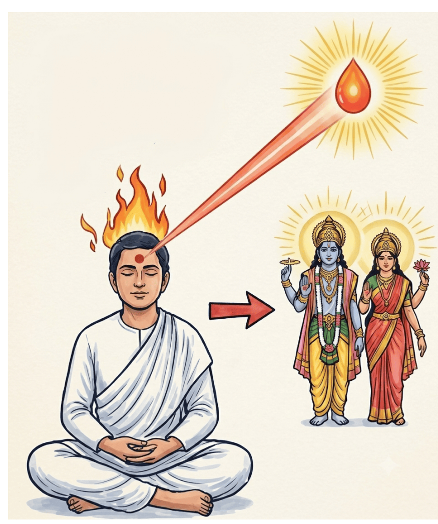

Method/Process/Instrument   Outcome/Output/Result

27-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:-अपनी श्रेष्ठ स्थिति द्वारा माया को स्वयं के आगे झुकाने वाले हाइएस्ट पद के अधिकारी भव

Finale Achievement

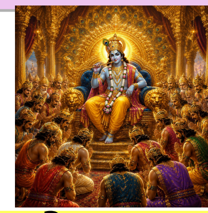

जैसे महान आत्मायें कभी किसी के आगे झुकती नहीं हैं, उनके आगे सभी झुकते हैं।

Swamaan

ऐसे आप बाप की चुनी हुई सर्वश्रेष्ठ आत्मायें कहाँ भी, कोई भी परिस्थिति में वा माया के भिन्न-भिन्न आकर्षण करने वाले रूपों में अपने को झुका नहीं सकती।

जब अभी से सदा झुकाने की स्थिति में स्थित रहेंगे तब हाइएस्ट पद का अधिकार प्राप्त होगा।

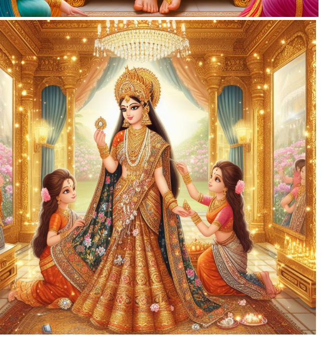

ऐसी आत्माओं के आगे सतयुग में प्रजा स्वमान से झुकेगी और द्वापर में आप लोगों के यादगार के आगे भक्त झुकते रहेंगे।

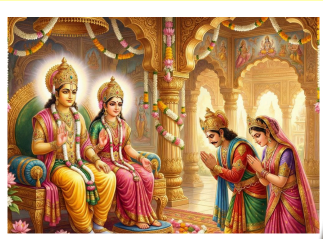
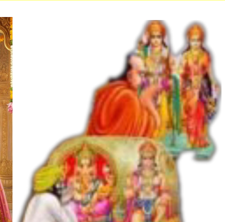

स्लोगन:- कर्म के समय योग का बैलेन्स ठीक हो तब कहेंगे कर्मयोगी।

Definition of

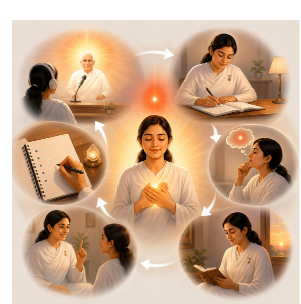

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

27-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा"

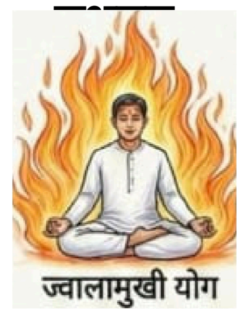

ये अव्यक्त इशारे -

ज्वालास्वरूप स्थिति में रह शक्तिशाली याद का अनुभव करो

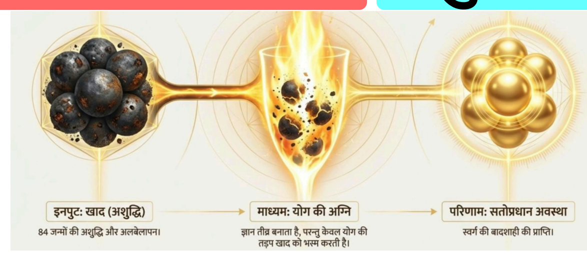

कई बच्चे कहते हैं कि जब योग में बैठते हैं तो आत्म-अभिमानी होने के बदले सेवा याद आती है। लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए

ये पक्का समझ लो..

क्योंकि लास्ट समय अगर अशरीरी बनने की बजाए सेवा का भी संकल्प चला तो सेकण्ड के पेपर में फेल हो जायेंगे।

Mind very well...

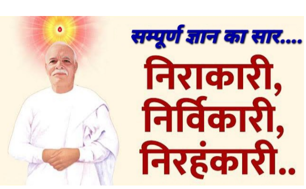

उस समय सिवाय बाप के, (1) निराकारी, (2) निर्विकारी, (3) निरहंकारी - और कुछ याद नहीं।

सेवा में फिर भी साकार में आ जायेंगे इसलिए जिस समय जो चाहे वह स्थिति हो नहीं तो धोखा मिल जायेगा।

Attention Please..!

Take it very Seriously..

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

TELEGRAM

WhatsApp

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans जून 26 → Click

All अव्यक्त इशारे जून 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

अमृतवेला

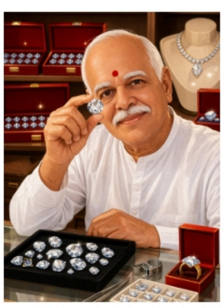

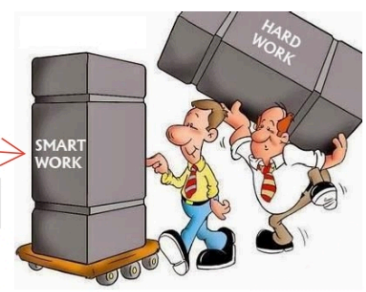

11.5 रोज़ अपने सम्पर्क वाली आत्माओं पर संकल्प द्वारा नज़र दौड़ाओ :

संकल्पों द्वारा ईश्वरीय सेवा करना — यह भी सेवा का श्रेष्ठ और नया तरीका है। जैसे जवाहरी होता है तो रोज़ सुबह को दुकान खोलते ही अपने हर रत्न को चैक करता कि साफ़ हैं, चमक ठीक है, ठीक जगह पर रखे हुए हैं, वैसे **रोज़ अमृतवेले अपने सम्पर्क में आने वाली आत्माओं पर संकल्प द्वारा नज़र दौड़ाओ**। जितना आप उन्हों को संकल्प से याद करेंगे, उतना वह संकल्प उन्हों के पास पहुँचेगा और वह कहेंगे कि हमने भी बहुत वारी आपको याद किया था। इस प्रकार सेवा के नये-नये तरीके अपनाते आगे बढ़ते जाओ। हर मास सम्पर्क वाली आत्माओं का विशेष कोई प्रोग्राम रखो, स्नेह मिलन रखो, अनुभव की लेन-देन वा मनोरंजन का प्रोग्राम रखो। किसी-न-किसी तरह से बुलाकर सम्पर्क बढ़ाओ। यह नहीं सोचो कि दो निकले या तीन निकले। एक भी निकले तो भी अच्छा, एक ही दीपक दीपमाला तैयार कर देगा।

← most optimistic Approach of Sweet बाबा

link of this song:→ Click

बापदादा कहते है कि : यह स्वदर्शन चक्र ही भविष्य में चक्रवर्ती राजा बना देता है।

तो आज आत्मा सजनी की सच्चे शिव साजन से स्वदर्शन चक्र फिराते हुए दृढ़ संकल्पो से भरी रूह रुहान।

Movie : dil to bachha hai ji (2010)

######

Spinnin' round and round
You got away with me, you mighty boy
Spinnin' round and round
Let's go to have a little funny fun
Spinnin' round and round
Get to see all the on the get around
And round, and round, and round, yeah...X2

(सदैव/non stop फिरते हुए स्वदर्शन चक्र [जिससे की माया तुम्हारे और मेरे बिच में जरा भी interfere न कर सके] के साथ तुमसे वायदा करते हैं की...)

Tere bin main dekhoon naa subah
Nigahon se abhi ye wada kar liya
Tere bin ho chalna bhi sazaa
Ke raahon se abhi ye wada kar liya
||2||

(ओ मेरे सारे ब्रह्माण्ड के सबसे सुन्दर/खूबसूरत/परम पवित्र पार वतन में रहनेवाले शिव साजन...!

तुम्हारे बिन मुझे अब आने वाली सुबह इन स्थूल आँखों से देखनी नहीं हैं अर्थात तूम्हारे बिन इस स्थूल शरीर में रहना नहीं हैं जो मैं ये पतित पुरानी दुनिया देखूँ- ये वादा हैं मेरा मेरी इन स्थूल आँखों से।

तेरे बिन एक कदम चलना भी किसी कड़ी से कड़ी सजा से कम न हो-ये हमने राहों से वायदा कर लिया हैं।)

Suno yahi jazbaat hai mere
Ye dil kahe ki khwahishe jeene ki sath hain tere

(ओ मेरे सच्चे हमसफ़र..!
जरा गौर से मेरे सच्चे और पवित्र जज्बात/feelings को सुनो जो कहते है कि ये जो थोड़ा सा संगम का समय बचा है उसके हर पल को बस तुम्हारे साथ ही बिताऊं/जीऊ - जो की मेरे दिल की सच्ची ख्वाहिशें हैं।)

Tere bin ho saanso se juda
Hawaao se abhi ye wada kar liya
(हमने हवाओं से भी अब ही वायदा कहो या order कर दिया हैं की

अगर तुम मेरे साथ नहीं तो उस हवा को अपने जिस्म में प्रवेश करने की इज़ाज़त नहीं हैं अर्थात हर पल आपकी ही याद में बीते।)

Tere bin main dekhoon naa subah
Nigahon se abhi ye wada kar liya

#####

स्व दर्शन चक्र

Spinnin' round and round
You got away with me, you mighty boy
Spinnin' round and round
Let's go to have a little funny fun
Spinnin' round and round
Get to see all the on the get around
And round, and round, and round, yeah...

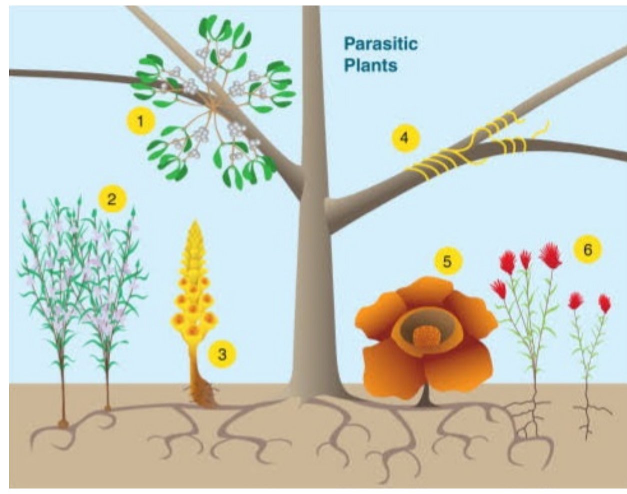

Tu woh zameen jis pe maine to apni ye duniya basaai hai
Main bin tere ab kahaan jaaunga

(ओ मेरी रूह..! {जैसे जिस्म रूह के बिना जिंदा नही रह सकता, तो मैं जिस्म आप मेरी रूह}
तुम ही तो मेरी वो सारी जमीन हो जिस पर मैंने अपनी पूरी दुनिया बसाई हैं-
जैसे कि मैं परोपजीवी पौधा/parasite और आप जीवंत मुख्य वृक्ष...

तो अब तुम्ही बताओं की ओ मेरी दुनिया, मेरे संसार - मैं तुम्हारे बिना अब जाऊं तो जाऊं कहाँ...?)

Total surrender

Tu aasra hai mera main to jeeta hoon tere bharose pe
Main bin tere ab naa jee paaunga

(जैसे किसी भटकते हुए बंजारे को आशरा मिल जाता हैं, जैसे किसी अति प्यासे को पानी मिल जाता है
उसी प्रकार अब तुम ही तो मेरा आशरा हो-जिसके भरोसे पर ही तो मैं जिन्दा हूँ।

तो ओ मेरे सच्चे सहारे...
मैं अब तो एक पल भी तुम्हारे बिना न जी पाउँगा।)

Meri to ye har baat tujh se hai

(मेरी तो हर एक बात अर्थात हर एक पल अब तुजसे ही हैं। सारि दुनिया मेरे लिए जैसे कि खत्म हुई पड़ी है।

Tu hi meri hai dhoop aur meri barsaat tujh se hai

मुज सूर्यमुखी की तुम ही तो वो धुप हो जिसे ग्रहण करने के लिए हर दम तुमको ही देखती रहती हूं और
तुम्हारे प्यार की मुज प्यासी चात्रक आत्मा की प्यास भी तुज बरसात से ही हैं।)

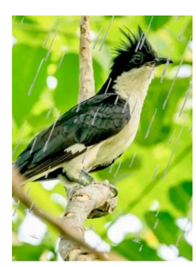

Tere bin na barse ye ghata
Ghataaon se abhi ye wada kar liya

(चूँ की मैं तुज सर्वशक्तिमान साजन की सजनी हूँ - तो मैं भी मास्टर सर्वशक्तिमान प्रकृतिजीत मायाजीत हूँ।
तो मैंने घटाओं से वायदा कहो या फिर strict order...
कह दिया हैं की अगर तुम मेरे साजन जो मेरे साथ नहीं तो उन घटाओं को बरसने की इज़ाज़त नहीं हैं।)

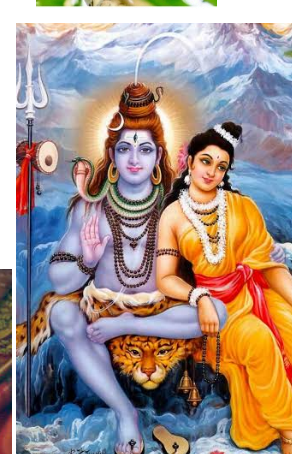

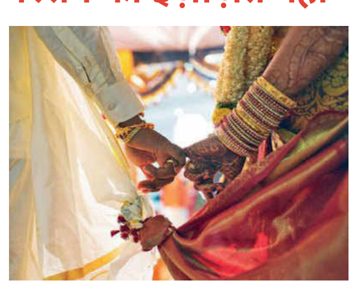

Tere bin main dekhoon naa subah
Nigahon se abhi yeh wada kar liya

######
Round and round... (स्वदर्शन चक्र)

Jo haath mein ho tera haath toh ye lakeere dhadakti hai
tu ho juda, sab thama sa lage

(ओ मेरे प्रियतम...!
जो मेरे हाथ में तुम्हारा हाथ हो तो इस हाथो की निर्जीव सी लकीरे भी धड़कने लगती हैं।

और अगर तुम मुज से जुदा होते हो तो चाहे इस दुनिया में अपार धन, सुख सुविधाओ समेत मित्र संबंधियो का मेला ही क्यों न लगा पड़ा हो -

परंतु जो तुम नही तो सारी दुनिया ही मेरे लिए थम जाती हैं अर्थात उसमे रिंचक भी रस व सुख नहीं भासता।)

Jo tu mere paas hai to yakeen apne hone pe hota hai
Tu ho juda sab guma sa lage

(तुम अगर मेरे साथ होते हो तो ' मैं हूँ '- इस बात का मुझे यकीन होता हैं अर्थात
तुम हो तो मैं हूँ, जो तुम नहीं तो मैं कुछ भी नहीं।

तुम मुझसे एक पल भी अगर जुदा हो तो
सबकुछ जैसे की बेयकिन/गुमनाम सा लगता हैं।)

Haa tu meri aadat me shaamil hai
mere liye main sach kahoon tu ibaadat ke qabil hai

(हाँ ये भी सच हैं की अब तो तुम मेरी आदत अर्थात संस्कारो में बस गए हों और इतने तो deep मेरे संस्कार में बस गए हो- जो माया सहित विश्व की सर्व आत्माएं एक जुट हो के भी इस संस्कारों को मिटाना चाहे 【अर्थात हम दोनों को जुदा करना चाहे】 तो भी रिंचक मात्र मिटा न सके। [जुदा न कर सके।]

ओ मेरे सनम,
तुम को मैं एक सच्ची बात कहूँ ..
तुम मेरे इबादत के काबिल तो क्या परंतु तुम ही मेरी हर एक पल की इबादत हो।

जिसमे बस तुम्हे पाने की अर्थात तुम समान बनने की ही ख्वाहिस हैं।)

Tere bin naa poori ho duaa
Duaaon se abhi ye wada kar liya

(तुम्हारे बिन अब मेरी कोई भी दुआएं पूरी न हो अर्थात हर संकल्पमे तुम्हारी ही श्रीमत एवं याद व प्यार हो, दुनियावी प्राप्ति की रिंचक मात्र भी इच्छा नही।

तो ये हमने दुआओं से भी अब ही पक्का वायदा कर लिया हैं।)

Tere bin main dekhoon naa subah
Nigahon se abhi ye wada kar liya

Round and Round... (स्व दर्शन)

∞======================∞

तो ये स्वदर्शन चक्र घूमने के कारण ये Result निकलता है कि हमारे सच्चे मात, पिता, बंधु, सखा, in short सर्वस्व सिर्फ शिव बाबा ही है।

जिसे भक्ति में सिर्फ कहने मात्र कहते थे कि

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव । ।

ड्रामा में सतयुग से लेकर अब तक भिन्न भिन्न आत्माओ के साथ जो पार्ट बजाया वो मात्र खेल था। उदाहरण: जैसे एक एक्टर किसी नाटक या फ़िल्म में किसी के साथ कैसा भी पार्ट बजाए किन्तु उसका सच्चा रिस्ता तो उसके परिवार से है जो उसके घर पर इन्तेजार कर रहा है।

तो अब हमें भी घर जाना है इसलिए दुनियावी सभी पार्टधारी को भूल अब अपने सच्चे घर परमधाम व सच्चे सर्व-संबंधी शिवबाबा को ही याद करना है।

list of other movie songs
Along with
Ruh-Rihaan
↓

Click